सुन्नते रसूल और इल्म

मौलाना सै० नसीर हुसैन साहब नक़वी साहब क़िब्ला

जब हम सरवरे रिसालत अरवाहुना लहुल फ़िदा की अमली ज़िन्दगी पर नज़र डालते हैं तो क़दम-क़दम पर हमें ऐसे आसार नज़र आते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इल्म की तरवीज और इशाअत में ग़ैर मामूली सरगर्मी दिखाई है ऐसी क़ौम जो उलूम की मुबादियात नविश्त व ख़्वान्द से भी महरूम थी। उनके सामने उलूम और मआरिफ़ के दरया बहा के रख दिये हैं और इसका असर यह हुआ कि जाहिल और गंवार अरब उलूम से इस हद तक बाख़बर हो गये कि ईरान और रोम की तहज़ीबें उनके सामने मांद पड़ गईं और इस्लामी मदारिस और इल्मी मराकिज़ इस हद तक तरक़्क़ी कर गये कि दुनिया भर के तश्नगाने उलूम इन्हीं मराकिज़ के इल्मी फ़ायदों से अपनी प्यास बुझाने लगे हज़रत रसूले अकरम[स०] ने अपनी मुक़द्दस तालीमात से इन्सानियत को उलूम के हासिल करने के रास्ते पर लगा दिया और हर मुसलमान के लिये लाज़िम कर दिया कि वह इल्म हासिल करे इसलिए हुज़ूर[स०] ने अपने गराँक़द्र इरशाद "तलबुल इल्मि फ़रीज़तुन अ़ला कुल्लि मुस्लिमिन" में इसके वुजूब पर मुहर लगा दी, आम ज़हनों में यह बात उतरवा दी कि इन्सानियत के अहम तरीन फ़राएज़ में इल्म हासिल करने का वह दरजा है जो इन्सानी जिस्म में रूह को हासिल है किसी को भी इससे अलग क़रार नहीं दिया जा सकता, इस्लाम ने समाज के हर शख़्स के लिये लाज़िम कर दिया कि वह इल्म हासिल करे इसमें ग़रीब और अमीर की भी कोई क़ैद नहीं, अमीर अपने माली वसाएल से फ़ायदा उठाकर उस दौलत से फ़ायदा उठा सकता है तो ग़रीब की ग़रीबी और लाचारी उसे इल्म से नहीं रोक सकती। फिर मज़े की बात ये है कि उसके लिए ज़माना, उम्र और वक़्त की क़ैद भी उठा दी। फ़रमायाः "उत्लुबुल इल्मा मिनल मह्दि इलल लह्दि" झूले से इल्म की शुरुआत होती है और क़ब्र के क़रीब पहुँचने तक उसका साथ रहता है ज़िन्दगी का कोई लम्हा भी तो ऐसा नहीं जिसमें इल्म हासिल करना वाजिब न रहता हो, हर लम्हा, हर वक़्त एक दीनदार मोमिन और मुस्लिम का फ़र्ज़ है कि वह अपनी इल्मी इस्तेदाद को बढ़ाते हैं इतना ग़ौर और फ़िक्र जो फ़र्ज़ की अदायगी से मेल खाता हो। क्या मिल्लत के लोग इसकी तरफ ध्यान देंगे। फिर इलाक़ाई हदों में भी वुस्अत पैदा कर दी कि जहाँ भी तुम्हें इल्म नज़र आ जाए चाहे दुनिया के दूर-दराज़ हिस्सों का सफ़र करना पड़े, हिम्मत के क़दमों में सुस्ती व काहिली न आने पाये। "उत्लुबुल इल्मा वलौ कान बिस्सीन" इल्म हासिल करो चाहे तुम्हें चीन ही जाना पड़े। क़दम-क़दम पर हुज़ूर ने इस अहम इन्सानी फ़रीज़े की अहमियत बतायी है। इल्म की इफ़ादियत और अहले इल्म की क़द्रो मन्ज़िलत से आगाह फरमाया है। चुनानचे एक मक़ाम पर अहले इल्मो फ़ज़्ल को अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का वारिस क़रार दिया है। इरशाद होता हैः "अल-उलमाउ वरसतुल अम्बिया" अम्बिया अलैहिमुस्सलाम का मिशन भी इशाअते उलूम था, उनके पेशे नज़र भी इन्सानी जेहालत की तारीकियों के पर्दों को नूरे इल्म से चाक करना था, उलमा उनके इल्म के अमानतदार होते हैं। यह इल्मी मीरास उनको पहुँचती है, बेशक यह सआदत जहाँ उनकी बड़ी अज़मत बढ़ा देती है उनकी ज़िम्मेदारियों में भी बड़ा इज़ाफ़ा हो जाता है और तब वह सही मानों में ख़ाज़िन और अमीन हो सकते हैं कि विरासत के हक़ को ठीक-ठीक काम में लायें। इन्सानी नस्ल में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम से बढ़कर तो कोई क़िस्म है नहीं और उलमा का उनका वारिस होना उनकी इज़्ज़त पर दलील है और यह इज़्ज़त इल्म की एहसानमन्द है, दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ समझें कि हक़ीक़त में यह इल्म और हिकमत ही की इज़्ज़त है और उसी की अज़मत है। हुज़ूर के इस पाक इरशाद का मतलब यह

हुआ कि इन्सानियत की मेराज बस इल्म ही है। इल्म ही से इन्सानियत अपने कमाल तक पहुँचती है और इसी की फ़रोज़ाँ क़िन्दील से ये ज़ुल्मतकदा रौशन हो सकता है।

हुज़ूरे अक़दस (रूही लहुल फ़िदा) अपनी एक और हदीस में यूँ इरशाद फ़रमाते हैंः ख़ुदावन्दा! —मेरे ख़ुलफ़ा पर रहम कर—! कुछ ने अर्ज़ किया, हुज़ूर[स॰] आपके वह ख़ुलफ़ा कौन हैं? इरशाद हुआः —"मेरे ख़ुलफ़ा वह लोग है जो मेरी तालीमात और अहादीस और सुन्नतों को फैलायेंगे और लोगों तक मेरे उलूम पहुँचायेंगे—" इस हदीस में भी अहले इल्म और दानिश की शान और मानवी अज़मत की तरफ़ लतीफ इशारे हैं, और इल्म की क़द्रो क़ीमत का पता चलता है। इन्सानियत के आख़िरी पैग़म्बर की नयाबत व ख़िलाफ़त की बुलन्दियों को ज़रा सामने रखिये, इसके ज़िम्न में इल्म की जो अज़मते इस्तेम्बात होती है उसका अन्दाज़ा फ़रमाइये— ज़रा उन ख़ुलफ़ा को पहचानते चलें। कौन हैं जो रसूल[स॰] के उलूम के ख़ाज़िन और वरसादार, आदाब और सुन्नते नबवी के अमीन हैं। "अना मदीनतुल इल्मे व अलिय्युन बाबुहा" इनको पहचानने के लिए काफ़ी है। हज़रत अमीरुल मोमिनीन का इरशाद हैः "मुझे रसूले ख़ुदा[स॰] ने इस तरह इल्म सिखाया है जिस तरह कबूतर अपने बच्चे को दाना खिलाता है"— इसी से इनको पहचान लीजिये। कहीं ऐसा न हो कि हर चमकदार चीज़ को देखकर सोना समझ लें। यह अहलेबैते सलवातुल्लाहि अलैहिम अजमईन का मन्सब है। और जिनकी नूरानी क़िन्दीलें उलूमे नुबुव्वत की मश्अल से फ़रोज़ाँ हुई हैं। सुन्नते रसूल[स॰] के ये मुकम्मल नमूने थे उन्हीं के दम से पैग़म्बर[स॰] की अहादीस व तालीमाते फैली और यही हैं वह हक़ीक़ी ख़ुलफ़ा (सलवातुल्लाहि अलैइहिम अजमईन)।

हज़रत अबुज़र ग़फ़्फ़ारी रहमतुल्लाह अलैह— इस्लाम की एक नामवर शख़्सियत हैं, रसूल[स॰] के सहाबियों में उनको एक ख़ास अज़मत है बारगाहे नबवी में क़ुरबत व बारयाबी हासिल है, उन बुज़ुर्ग सहाबियों में हैं जिनकी जन्नत मुश्ताक़ है। नबी[स॰] की हदीसों से उनकी जलालते क़द्र का अन्दाज़ा होता है। हुज़ुर सरकारे रिसालत[स॰] ने अबुज़र[रज़ि॰] ही को मुख़ातब फ़रमा कर एक अज़ीम हदीस में इल्म के फ़ज़ाएल बयान फरमाये हैं, जो चश्मे बसीरत के लिए नूर हैं। इल्म की अहमियत और अफ़ादियत, उसकी अज़मत और फ़ौक़ियत का इससे पूरा-पूरा अन्दाज़ा होता हैः हुज़ूर फ़रमाते हैं ऐ अबुज़र[रज़ि॰]—! **एक घड़ी ऐसी मजलिस में बैठना जहाँ इल्मी गुफ़्तगू हो रही हो बेहतर है और अल्लाह तआला को ज़्यादा महबूब है, हज़ारों रातों की शब ज़िन्दादारी है और रातें भी कैसी कि हर रात में हज़ार-हज़ार रकात नमाज़ अदा की गई हो**— और यह हज़ार दफ़ा ख़ुदा के रास्ते में जेहाद करने से बेहतर है— और बारह हज़ार ख़त्मे क़ुर्आन करने से पसन्दीदातर— एक साल की इबादात से बढ़कर इस हाल में कि उसके दिनों में इन्सान रोज़ेदार रहा हो। और उसकी रातों को इबादत में ज़िन्दा रखा हो। ऐ अबूज़र[रज़ि॰]! जो शख़्स अपने घर से किसी इल्मी मसले के अख़्ज़ का क़स्द व इरादा लेकर निकलता है या इल्म हासिल करने के लिए वतन से दूर होने वाला रास्ता चुनता है हर क़दम जो वह उठाता है उसे एक पैग़म्बर का सवाब मिलता है। और बद्र के शोहदा ऐसे हज़ार शोहदा जैसा बदला। हर हर्फ़ जो किसी आलिम से सुनता है लेता है और लिखता है, इसके बदले में इसे जन्नत में एक शहर अता किया जाता है। एक तालिबे इल्म की इससे बढ़कर क्या सआदत होगी कि ख़ुदावन्दे आलम उसको दोस्त रखता है। फ़रिश्ते और अम्बिया उससे मुहब्बत करते हैं, नहीं बल्कि हर नेक और भला इन्सान उससे मुहब्बत और उलफ़त रखता है। क्या कहना इल्म हासिल करने वालों का। आलिम के चेहरे पर नज़र करना, हज़ारों ग़ुलामों को आज़ाद करने से बेहतर है इल्म दोस्त के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। एक तालिबेइल्म और इल्म का दोस्त सुबह और शाम ऐसी हालत में करता है कि ख़ालिक़ की रज़ा इस पर मुहीत है। वह दुनिया को नहीं छोड़ता, मगर यह कि उसे शराबे कौसर से सैराब किया जाता है और उसे जन्नत के मीठे और मज़ेदार फल खिलाये जाते हैं। मरने के बाद क़ब्र में बिच्छू उसे काट नहीं खाते, उसकी लाश ज़मीन के कीड़ो मकोड़ो का खाना नहीं बनती, फिर जन्नत में वह होगा और हज़रत ख़िज़्र[अ॰] की मुसाहेबत और रिफ़ाक़त—"

इस हदीस पर ग़ौर कीजिये और क़ुर्आने हकीम के लफ़्ज़ "ख़ैरे कसीर" को पेशे नज़र रखिये, आपको मालूम होगा कि वाक़ई तमाम ख़ूबियाँ इसी के तहत पैदा होती हैं। और सब नेकियों की असल यही इल्म है। ❁❁❁